Dr. Raj Gopal,
Assistant Professor
Department of Philosophy
V.S.J. College Rajnagar

Law of Karma (Lecture-2)
(कर्म का सिद्धान्त) (व्याख्यान-2)

कल के व्याख्यान में कर्म के तीन भेद की चर्चा किये थे।

(i) संचित कर्म :- संचित कर्म उन कर्म को कहते हैं। जो अतीत कर्मों से उत्पन्न होते हैं, जिसका फल मिलना अभी शुरू नहीं हुआ है। इस कर्म का संबंध अतीत जीवन से है।

(ii) प्रारब्ध कर्म :- प्रारब्ध कर्म उन कर्म आदि को कहते हैं जो अतीत कर्मों से उत्पन्न हुए हैं। लेकिन इसका फल मिलना अभी शुरू हो गया है।

(iii) संचीयमान कर्म :- इन्हें क्रियमाण कर्म भी कहते हैं। ये वे कर्म हैं जिन्हें व्यक्ति वर्तमान समय में करता है। संचीयमान कर्म ही भविष्य में प्रारब्ध एवं संचित कर्म बनते हैं। इस प्रकार से वर्तमान जीवन के कर्मों का [redacted] जिसका फल भविष्य में मिलेगा संचीयमान कर्म कहते हैं।

भारतीय दर्शन में सबसे पहले प्रारब्ध कर्मों का फल मिलता है। उसके बाद संचित कर्मों का फल प्राप्त होता है और सबसे अंत में संचीयमान कर्मों का फल प्राप्त होता है। अच्छे संचीयमान कर्मों से संचित कर्म को जलाया जा सकता है किन्तु प्रारब्ध कर्मों को नष्ट नहीं किया जा सकता है। प्रारब्ध कर्म का नाश भोगने से ही होता है। शंकराचार्य आदि वेदान्तियों का भी मानना है। तत्वज्ञान की प्राप्ति से संचित कर्म का नाश एवं संचीयमान कर्म का निवारण होता है। तत्वज्ञान से भी प्रारब्ध कर्म का निवारण नहीं होता है। इसका निवारण भोग से ही होता है। इसी कारण जीवनमुक्ति के बाद भी शरीर तब तक बना रहता है जब तक प्रारब्ध कर्म को भोग नहीं लिये जाते।

Scanned with CamScanner

कर्म सिद्धान्त के अनेक दोष हैं। सबसे पहले यह ईश्वरवाद का खंडन करता है। ईश्वरवाद के अनुसार ईश्वर विश्व का सृष्टा है ईश्वर ने मानव को दुखी और सुखी बनाया है। परन्तु कर्म सिद्धान्त मनुष्य के सुख दुख का कारण स्वयं मनुष्य को मानकर ईश्वरवादी विचार का खंडन करता है।

कर्म सिद्धान्त ईश्वर की पूर्णता का खंडन करता है। ईश्वर को सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, दयालु इत्यादि कहा जाता है। परन्तु कर्म सिद्धान्त को मानने पर ईश्वर को चाहने पर भी वह मनुष्य को उसके कर्मों के फल से वंचित नहीं कर सकता है। जो व्यक्ति पुण्य कर्म करता है वह किसी प्रकार से ईश्वर की दया से लाभान्वित नहीं होता है। इस प्रकार से ईश्वर की पूर्णता से कर्म-सिद्धान्त विरोध करता है।

कर्म सिद्धान्त का तीसरा दोष यह है कि यह सिद्धान्त सामाजिक सेवा में शिथिलता उत्पन्न करता है, किसी असहाय या पीड़ित की सेवा करना बेकार है, क्योंकि वह अपने पूर्व कर्मों का फल भोगता है। लेकिन कर्तव्य पालन के उद्देश्य से सेवा किया जा सकता है।

कर्म सिद्धान्त का भारतीय विचारधारा में महत्व यह है कि यह संसार के सभी व्यक्तियों के जीवन में जो असमानताएँ हैं उसका कारण बतलाता है। कोई धनवान है तो कोई निर्धन कोई विद्वान तो कोई मूर्ख है। इसका कारण कर्म सिद्धान्त बतलाता है।

कर्म सिद्धान्त की दूसरी महत्ता यह है कि यह मानव को कुमार्ग से बचाता है। इसके अनुसार मानव के शुभ या अशुभ सभी कर्मों का फल मिलता है। यह जानकर की अशुभ कर्मों का फल हमें भोगना पड़ेगा। मानव अशुभ कर्म करने से बचता है।

कर्म सिद्धान्त की एक महत्ता यह भी है कि यह मानव में आशा का संचार करता है। प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। वर्तमान जीवन के शुभ कर्मों के द्वारा एक मानव भविष्य जीवन को सुन्दर बना सकता है।

Scanned with CamScanner